IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

महिलाओं में सांस्कृतिक एवं धार्मिक अभिरूचि का एक अध्ययन

डॉ. निशा सिंह
अतिथि विद्वान समाजशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

किसी भी क्षेत्र या समाज की संस्कृति की बाहिका महिलाएं है। महिलाएँ किसी क्षेत्र, वर्ग और समाज की समाजिक जीवन शैली, वहॉ की संस्कृति की आधार शिला है। खान–पान, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, परिधान, मान्यताएं और परम्पराएं आदि ऐसे महत्वपूर्ण कारक है जो संस्कृति को जीवन्तता और अलग पहचान देते है। यह पहचान संबंधित क्षेत्र और निवास कर रहें समुदायों के पारम्परिक चिंतन और रीति–रिवाजों पर आधारित होती है। हर क्षेत्र और समुदाय के सांस्कृतिक चिंतन भिन्न–भिन्न होते हैं। उनके मनाने और प्रस्तुतीकरण के शैली में विविधता होती है। शैलीगत विविधता ही क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक पहचान है। अध्ययन क्षेत्र रीवा जिले की भौगोलिक और राजस्वीय संरचना विभिन्नता लिये हुये हैं। जिस कारण जिले की पूर्वी क्षेत्र की संस्कृति मिर्जापुर से, उत्तरी क्षेत्र की इलाहाबाद से, पश्चिमी क्षेत्र की बांदा से और दक्षिणी क्षेत्र की बुंदलखण्ड से प्रभावित है। जिले के दो भौगोलिक क्षेत्र तरहार एवं उपरहार में भी सांस्कृतिक एवं धार्मिक अभिरूचि में भी भिन्नता है।

मुख्य शब्द :– महिला, सांस्कृति, धार्मिक, अभिरूचि, रीति रिवाज आदि।

प्रस्तावना :–

मानवीय समाज के दो प्रमुख आयामों स्त्री–पुरूष के संदर्भ मे चर्चा करे तो पुरूष को यदि हम धर्म का प्रतीक मानों तो स्त्री अपने आप संस्कृति का रूप धारित कर लेती है। यहॉ यह कहना अन्यथा न होगा की नारी स्वयं में एक संस्कृति है उसके आचार–विचार, जीवन शैली में विभिन्न प्रकार की मान्यताएं –परम्परायें इस तरीके से सनिद्ध होती है कि संस्कृति की परिकल्पना बिना नारी समाज के बेमानी लगने लगती है। संस्कृति के विभिन्न आयामों यथा–रीति, रिवाज, परम्पराये, मान्यताये, व्रत, पूजा, उत्सव, त्यौहार, नृत्य, संगीत, साज, सज्जा एवं परिधान, गीत, मिथक, कहानियॉ आदि सभी कारक स्वभाविक रूप से नारी के कार्य व्यवहार, नारी के स्वाभिक जीवन मे समाहित होते हुए परिलक्षित होते है । इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि मानव इसलिए मानव है कि उसके पास संस्कृति है। संस्कृति के अभाव में मानव को पशु से श्रेष्ठ नहीं माना जा सकता। संस्कृति ही मानव की श्रेष्ठतम धरोहर है जिसकी सहायता से मानव पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ता है, प्रगति की ओर उन्मुख होता है।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक अभिरूचि के उन्नयन में भाषा का अपना विशेष महत्व है। भाषा का वैशिष्ट ही सांस्कृतिक स्वर लहरियों को लोकरूचि बनाता है। इस तरह क्षेत्र विशेष की बोली और बानी सांस्कृतिक उत्थान और विस्तार में बहुत ही प्रभावी होती है। वास्तव में भाषा और प्रतीकों के माध्यम से ही मानव ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति कर पाया है। अतः स्पष्ट है कि मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपनी इन विशेषताओं व क्षमताओं के कारण संस्कृति का निर्माण कर पाया है। भौतिक क्षेत्र में अनेक वस्तुओं को निर्मित कर पाया है एवं अभौतिक क्षेत्र में अनेक विश्वासों तथा व्यवहार के तरीकों को जन्म दे पाया है।

प्रसिद्ध आलोचक एवं कवि मैथ्यू ऑनोल्ड–''जीवन के प्रकाश एवं कोमलता को संस्कृति कहते हैं। ''भौतिक संस्कृति में परिवर्तन का प्रमुख आधार आर्थिक अवस्थापना होती हैं, एतद यह कहना ठीक होगा कि आर्थिक स्थिति किसी भी क्षेत्र के सांस्कृतिक स्थिति की पृष्ठिभूमि बनती है क्योंकि संस्कृति का आधार बोली–भाषा, उत्सव–त्योहार, मान्यताएँ–परम्पराएँ, व्यवहार और रूढ़ियाँ, विश्वास और उपासना होती है जैसे–जैसे आर्थिक स्थिति बदलती जाती है सांस्कृतिक मान्यताएँ और परम्परायें भी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

बदलती जाती हैं। निम्न आर्थिक स्थिति वाले परिवार समाज और क्षेत्र में पुरातन मान्यताएँ, अन्ध विश्वास, रूढ़ि परम्पराएँ का प्राधान्य रहता है जबकि विकसित आर्थिक स्थिति वाले क्षेत्र, समाज और परिवार में इन सबका परिमार्जित रूप दिखता है।

'संस्कृति' शब्द 'संस्कृत' भाषा से लिया गया है। संस्कृत और संस्कृति दोनों ही शब्द 'संस्कार' से बने हैं। संस्कार का अर्थ है कुछ कृत्यों या अनुष्ठानों को सम्पन्न करना। एक हिन्दू जन्म से ही अनेक प्रकार के संस्कार करता है जिसमें उसे विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं। संस्कृति का अर्थ होता है–– विभिन्न संस्कारों के द्वारा सामूहिक जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति। यह परिमार्जन की एक प्रक्रिया है। संस्कारों को सम्पन्न करके ही व्यक्ति सामाजिक प्राणी बनता है। प्रत्येक समाज की अपनी सामाजिक मान्यताएं एवं रहन–सहन का एक स्तर होता है। समाज के कई पक्षों में विभिन्न मान्यताएं प्रचलित हैं जैसे कि स्वर्ग–नर्क लोगों की मान्यता है कि आकाश के उपर स्वर्ग है जहां देवता निवास करते हैं तथा जो व्यक्ति यहां अच्छा कार्य करते हैं मृत्यु के बाद स्वर्ग चले जाते हैं। इसी प्रकार से पुनर्जन्म, भूत–प्रेत, और डायन तथा जादू–टोने के बारे में अनेक सामाजिक मान्यताएं प्रचलित हैं। जिन्हे अंध विश्वास भी कहा जाता है।

किसी भी समाज के सांस्कृतिक आधार में उस क्षेत्र और समाज की बोली भाषा, रीति–रिवाज चिंतन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अध्ययन क्षेत्र रीवा जिले में सांस्कृतिक आधार के रेखांकन के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर विचार किया गया है–

भाषा संस्कृति की संवाहिका है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भाव और विचार, राग और विराग, दुख और सुख, खुशियां और अल्हाद की अभिव्यक्ति करता है। भाषा व्यक्ति को जन्म के साथ प्रकृति का मिला उपहार है जिसकी शैलीगत भिन्नता के कारण अलग अलग नाम दिये गये है। पर मूल रूप से हर भाषा का आधार ध्वनियां हैं, जो संकेतिक स्वरूप पाकर भाषा के रूप में चिन्हित होती है। अध्ययन क्षेत्र रीवा जिले में मूल रूप से बघेली भाषा बोली जाती है। जिसके संस्कार अवधी से मिलते जुलते हैं।

अध्ययन क्षेत्र की आम बोलचाल और ग्रामीण क्षेत्र की भाषा बघेली है। परन्तु पठन पाठन और बौद्धिक स्तर पर विचार विनिमय की भाषा खड़ी बोली और अंग्रेजी है। क्षेत्रीयता एवं वर्ग जाति समुदाय के कारण परिवर्तित शब्द विन्यास एवं अभिव्यक्ति शैली को दृष्टिगत रखते हुए बघेली के कई रूपों की बात की जाती है। पर सम्यक दृष्टि से देखे तो बघेली का एक ही कलेवर है जिसमें साहित्य सृजन एवं भावाभिव्यक्ति प्रचुर मात्रा में की जाती है।

रीति–रिवाज –

रीति–रिवाज और परम्पराएं संस्कृति की आधार संरचना है। रीति–रिवाजों का संबंध परम्परा से आने वाली चिंतन शैली और मान्यताओं से हैं। मानव की आवश्यकताएँ असीमित होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मानव के मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के विचार उत्पन्न होते है। इन विचारों को वह बार–बार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रयोग करता है। जब समूह के अन्य व्यक्ति भी उसका अनुसरण करने लगते है व आवश्यकता की पूर्ति में उस विचार का बारबार प्रयोग करने लगते है तो वह समूह की आदत बन जाती है जिसे जनरीति या 'रीति–रिवाज' कहते हैं।

जिस क्षेत्र की संस्कृति का इतिहास जितना दीर्घकालिक होता है उस क्षेत्र में प्रचलित विश्वास रीति–रिवाज एवं मान्यताएँ भी उतनी ही वैविध्यपूर्ण और बहुसंख्यक होती हैं। चूँकि विन्ध्य का इतिहास बहुत पुराना है अतः इस समाज में प्रचलित रीति–रिवाज और मान्यताओं की संख्या भी बहुत अधिक है। इनकी रीति–रिवाज पर हिन्दू धर्म का पर्याप्त प्रभाव देखने को मिलता है।

व्यवहार एवं रूढ़ियाँ –

क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक पहचान वहाँ प्रचलित रूढ़ियां और अन्धविश्वास हैं। रूढ़ियां और अंधविश्वास ऐसे कारक हें जिनसे किसी भी क्षेत्र के जनमानस का पारिवारिक, सामाजिक जीवन की विशिष्ट पहचान प्रतिबिंबित होती है। विश्व के विभिन्न

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

क्षेत्रों में क्षेत्र विशेष के पर्यावरणिक और भौगोलिक आयामों के अनुरूप वहां रूढ़ियां और लोकविश्वास प्रचलित होते हैं। रूढ़ि शब्द का प्रयोग डब्ल्यु0 जी0 समनर ने पहली बार किया था। जब कोई रीति–रिवाज या प्रथा अधिक निश्चितता एवं स्थायित्व प्राप्त कर लेती है, तो वह रूढ़ि बन जाती है। रूढ़ि बनने के लिये यह आवश्यक है कि उस प्रथा या रीति–रिवाज के साथ सामाजिक कल्याण की भावना भी जुड़ जावे। इन्हीं रूढ़ियों, प्रथाओं, रीतिरिवाजों के मुताबिक हम जब क्रियाकलाप करते है या उन्हें आदत के रूप में करने लगते है तो उसे व्यवहार कहते हैं।

यह कहना अन्यथा न होगा कि रूढियां और अंधविश्वास भी संस्कृति की पहचान होती है। अध्ययन क्षेत्र रीवा जिले के विभिन्न क्षेत्रीय इकाईयों और समुदायों में अलग–अलग रूढ़ियां और लोकविश्वास प्रचलित हैं। ये कारक सामाजिक और पारिवारिक रूचि–अभिरूचि तथा कुल–खानदान और उनके पारिवारिक सामाजिक रिश्ते–नातों से प्रभावित होती है। रूढ़ि एवं लोकविश्वास के संबंध में लोकसंस्कृति के सचेतक डॉ. लालजी गौतम से चर्चा के दौरान जानकारी मिली कि रूढ़ियां और लोकविश्वास किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान के आधारबिंदु हैं।

शगुन विचार–

संस्कृति की भावभूमि लोक जीवन से बनती है। वैज्ञानिक क्रांति के इस दौर में भी जब हर बात को बैज्ञानिक तरीके से मानने और स्वीकारने की मुहिम चल रही है मानव मन में परम्परा से संचित चिंतन के अवशेष उसे शुभाशुभ और शगुन विचार का विश्वास करने के लिए प्रेरित करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में हिन्दू मतावलांबियों की संख्या प्रचुर है जिनमें शुभ शगुन मानने की परम्परा हैं हिन्दुओं की भाँति अन्य समुदाय के लोग भी शुभ और अशुभ शगुन के प्रति आस्थावान है।

अंधविश्वास–

अंधविश्वास लोकविश्वास का प्रतीकात्मक रूप है। मान्यता और परम्परा का बीजारोपण लोकविश्वास से प्रारम्भ हुआ। परन्तु जब लोकविश्वास की वैज्ञानिकता पर प्रश्न चिन्ह लगने लगे तो वे अंधविश्वास के रूप में चिन्हित होने लगे। समय के साथ परिवर्तित होने वाले जीवन मूल्य लोकविश्वास के अभिधार्थ की परिभाषा बदल देते हैं, जिस कारण किसी समयमान लोकविश्वास, नवीन परिदृश्य में बेमानी और औचित्यहीन लगने लगता है। पर यह बदलाव समूचे जनमानस को स्वीकार नही होता है। इस बदलाव के पीछे स्थिति यह होती है कि समाज के कुछ लोग या बहुसंख्यक लोग उन विश्वासों को नही मानतो, और जो लोग उन विश्वासों को मानते हैं, उनकी समझ पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुये मान्य विश्वासों को अंधविश्वासों के रूप में परिभाषित करने लगते हैं।

मान्यताओं परम्पराओं के संदर्भ में पूर्व प्राचार्य डॉ ज्ञानवती अवस्थी भी विश्वास करती है चर्चा करने पर कि क्या वे अंध विश्वासों के उन्होनें बडी सहजता से कही कि यदि सामने वाले को खुशी और मानसिक सुकुन मिलता है तो मान लेने मे हर्ज ही क्या है? इस तरह रीवा जिले में भी किसी रूप में अंधविश्वास को स्वीकार्यता है।

लोक कला एवं लोक प्रसाधन–

लोक कला और लोक प्रसाधन संस्कृति की आधार संरचना में निबद्ध है इसके तहत लोकगीत लोककलाए और लोक प्रसाधन के संसाधन आते है। लोक संस्कृति के विविध कारक मूल रूप से पारिवारिक सामाजिक सरंचना को उदत्ता प्रदान करने तथा हॅसी–खुशी और उल्लास का वातवरण बनाने में सहायक होती है। सांस्कृतिक कारक जहां व्यक्ति के आर्थिक सामाजिक उन्नयन को रेखांकित करते हैं, वहीं क्षेत्र विशेष के विभिन्न रागविरागों को भी शब्द देते हैं। सांस्कृतिक कारकों में आधारभूत कारक तथा परंपराएं वस्तु आभूषण कला, संसाधन, सौन्दर्य लोकनृत्य, संस्कार, उत्सव, त्योहार आदि आते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

संस्कारः–

भारतीय संस्कृति मे वैश्विक पहचान उसके विभिन्न संदर्भ मे व्यापक समाजिक संस्कार है जिनके माध्यम से इस तरह से प्रभावशाली वतर्मान बनाया जाता है कि मानव का प्रकृति एंव अन्य चराचर जीवो से अत्मीय संबध बन जाता है जिसके पीछे मुख्य चितन मानव का पर्यावरण मे समाहित होना हो रहा है इस तरह मानव से जन्म से लेकर मृत्यु पश्चात तक के विभिन्न संस्कारो मे प्रकृति के प्रभावी कारो के से बराबर दाताम्य स्थापित करने की कोशिश होती रहती है विभिन्न प्रकार की वनस्पतिया पेड–पौधे के डाले, विभिन्न समुदाय के लोगो की सामूहिक उपस्थिति संस्कारों को जीवस्तता प्रदान करती रही है।

मानव जीवन में संस्कारों का विशेष महत्व है। विश्व के प्रत्येक भाग में संस्कार किसी न किसी रूप में पाये जाते हैं। देशकाल और परिस्थितियों के कारण संस्कारों में भिन्नता देखने को मिलती है। वर्तमान में संस्कारों को मनाने की पूर्व से चली आ रही परंपरा में व्यापक परिवर्तन आया है, वे संस्कार जो कभी सुचिता, सादगी और ग्रह, नक्षत्र तथा देवी–देवताओं के आह्वान और उनसे स्वयं तथा जीव जगत के प्रति कल्याण की अभ्यार्थना की जाती थी इसकी जगह अब हसी, ठिठोली और खुशियाँ मनाने के आयाम बन गये हैं। समाज विज्ञान की विदुषी डॉ. श्रीमती रचना श्रीवास्तव ने एक चर्चा के दौरान आश्चर्य की मुद्रा में बताया कि दूर–रिश्तेदारी में एक आयोजन में गये थे वहॉ चर्चा चल रही थी कि विवाह उत्सव में बर और वधू ने खूब इन्ज्वाय किया। संस्कारों का यह परिवर्तित स्वरूप आने वाले समय में सामाजिक परिवर्तन का द्योतक बन रहा है। संस्कारों की कड़ियों पर नजर डालें तो सबसे अधिक मान्य और स्वीकार संस्कार जन्म संस्कार है और संस्कारों की श्रृंखला की कड़िया भी यहीं से शुरू होती है।

जन्म संस्कारः–

मानवीय संस्कृति मे जन्म सस्कार सबसे प्रमुख एव श्रेष्ठ माना जाता है विभिन्न समुदायो मे जन्म संबधी बनाये जाने वाले संस्कार पर मूल रूप से उनमे कही न कही एक रूपता दिखाई देती है। जन्म संस्कार को व्यापक सामाजिक स्वीकारता मिली हुई है यह संस्कार जहॉ एक नव सदस्य का परिवार मे प्रवेश का होता है वही नवजात शिशु के उत्तरोत्तर विकास और प्राकृतिक दैविक संकटों से मुक्ति दिलाने का सामाजिक प्रयास भी होता है जन्म संस्कार मनाने की परम्पराओं में मूल रूप से दो तरह की परम्पराये दिखती है एक तो ठेठ लोक सांस्कृति पर आधरित जिससे हम पारम्परिक कहते है दूसरी आधुनिक जो पश्चिमी देशो के आचार विचार से प्रभावित होती है।

विवाह संस्कारः–

विवाह मानव समाज की एक सर्वव्यापी संस्था है। प्रत्येक समाज में विवाह के अलग–अलग नियम होते है इन्हीं नियमों के आधार पर विवाह सम्पादित किया जाता है, कुछ समाजों में विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना जाता है तो कुछ समाज में यह समझौता के रूप में तथा कुछ पश्चिमी समाजों में यह मित्रता व सुविधा पूर्ण बन्धन के रूप में होता है।

हिन्दू दर्शन में विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना गया है इस संस्कार के बाद ही व्यक्ति पारिवारिक जीवन में प्रवेश करता है। पुरूषों के लिए ऋणों से मुक्ति व स्त्रियों के लिए परितक्ता धर्म का पालन करना अनिवार्य माना गया है। एक हिन्दू जीवन की सार्थकता धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। अर्थात मोक्ष की प्राप्ति के लिए स्त्री और पुरूष दोनों को विवाह करना अनिवार्य है। इस तरह हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है।

विवाह रूपी संस्था किसी न किसी रूप में विश्व के सभी समाजों में पाई जाती है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अध्ययन क्षेत्र में कुछ विवाहित, कुछ अविवाहित

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

और कुछ विधवा एवं परितक्ता भी मिले है। वस्तुतः महिलाओं की स्थित का गहराई से अध्ययन करने के लिए विवाह का एक महत्वपूर्ण वृतखण्ड है। समाज में भी लड़कियों की शादी अनिवार्य है। प्रत्येक परिवार अपनी लड़की की शादी समय पर करना चाहती है।. समाज में अविवाहिता को अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता। विवाह को एक सामाजिक संस्कार माना जाता है। विवाह एक ही गोत्र में करना प्रतिबंधित होता है। यह संस्कार कई तरह से सम्पादित किया जाता है।

वस्त्र एवं आभूषण–

संस्कृति के विस्तारीकरण में वस्त्र एवं आभूषण का बहुत बड़ा योगदान है। वास्तव में वस्त्र और आभूषण अर्थात परिधान और गहने ही किसी भी क्षेत्र की सांस्कृति पहचान को निरूपित औ व्याख्याति करते हैं। वस्त्र लोगों की रूचि अभिरूचि के परिचायक हैं। क्षेत्र विशेष और जाति वर्ग विशेष में वस्त्रों के धारण करने की परंपरा पुरातन काल में भिन्न–भिन्न थी समय के साथ धीरे–धीरे परिवर्तन का दौर शुरू हुआ और पारंपरिक तथा क्षेत्रीय वस्त्रों की जगह पश्चिमी देशों से आयातित और भारतीय परिधान शैली के सामंजस्य में सामंजय बना करके नये–नये परिधान चलन में आये जो लोगों की रूचि–अभिरूचि, उनके सांस्कृतिक रूझान को प्रदर्शित करते हैं।

शोध निष्कर्ष –

महिलाओं की सांस्कृतिक एवं धार्मिक अभिरूचि के विविध आयामों पर केन्द्रित प्रस्तुत अध्याय के विभिन्न तथ्यों और मान्यताओं के विवेचन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सांस्कृति एवं धार्मिक अभिरूचि बलवती है। अध्ययन क्षेत्र की महिलाएं पूरे मनोंयोग से सांस्कृति एवं धार्मिक आयोजनों तथा अनुष्ठानों में भाग लेती हैं। उपलब्ध संसाधनों और परिस्थितियों के अनुसार अपने आकांक्षाओं और अभिरूचियों अनुसार सांस्कृतिक उत्सवों, पर्वो तथा धार्मिक अनुष्ठानों में अपनी सहभागिता निभाती हैं।

अध्ययन के दौरान जो सबसे महत्वपूर्ण बात देखने को मिली वह यह है कि पढ़ी लिखी और उच्च पदों पर कार्यरत महिलाएं भी सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजनों को पूरे मनोयोग से न केवल स्वीकार करती है वल्की उनमें अपनी प्रभावी भूमिका भी निभाती हैं। अध्ययन के दौरान संगीत की प्राध्यापक डॉ. सुहासनी साठे ने बताया कि ''सांस्कृतिक आयोजन मेल मिलाप और आत्मीय संबंधों में सहायक होते हैं। इनसे समाज की जीवंतता और सुचिता में वृद्धि होती है।'' निश्चय ही सांस्कृतिक आयोजनों की आधारशिला महिलाओं पर टिकी हुई हैं कहा भी गया है कि यदि पुरूष सभ्यता का वाहक है तो नारी संस्कृति की वाहिका है। नारियों के बिना संस्कृति का उत्थान और विकास संभव नहीं और सांस्कृतिक समरसता के बिना मानव समाज रस हीन और सार हीन हो जायेगा।

अध्ययन का दूसरा पहुलू धार्मिक अभिरूचियों पर है। धर्म के संबंध में कहा गया है कि धार्यति इति धर्मः अर्थात तो धारण किया जा सके, जो स्वीकारा जा सके वहीं धर्म है। इस संदर्भ में विध्य क्षेत्र की ख्यातिलब्ध बिदुषी डॉ. ज्ञानवती अवस्थी का कहना है कि ''धार्मिक संदर्भ खसतौर पर हिन्दू धर्म चिन्तन सद्भाव और समभाव पर केन्द्रित है। उन्होंने कहा कि समय सापेक्ष धर्म के निर्वहन की परंपराओं में संशोधन और परिमार्जन होते रहना चाहिए।'' इससे धर्म के प्रति लोगों का आकर्षण और आस्था तो बढ़ती ही है, धर्म की जीवंतता में भी वृद्धि होती है। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओं के विचार और अभिरूचि में डॉ. अवस्थी की विचारधारा का उन्मेश दिखता है। निश्चय ही इन प्रभावी महिलाओं ने ही अध्ययन क्षेत्र में धार्मिक सुचिता और सद्भाव का वातावरण बनाएं रखने में प्रभावी भूमिका का निर्वहन किया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

सन्दर्भ गन्थ सूची –

[1]. सक्सेना डॉ. दीपाली – भारतीय समाज एवं महिला सशक्तिकरण

[2]. डॉ अलका द्विवेदीः भारतीय समाज में महिलाओं की विकास यात्रा

[3]. राधा मिश्रः समाज में महिलाओं की सशक्त भागीदारी

[4]. डॉ कमलेशबाबू महिला अधिकार के सन्दर्भ में शैक्षिक परिदृश्य

[5]. अल्का द्विवेदी : भारतीय समाज में महिलाओं की विकास यात्रा

[6]. मागटेट वेन्कटेनः स्त्री मुक्ति का राजनीतिक अर्थशास्त्र

[7]. मीनाक्षी सिंहः महिला सशक्तिकरण का सच

[8]. डॉ प्रवीणा देवी महिला सशक्तिकरण आज के संन्दर्भ में

[9]. डॉ. नुसरत बानों : समान नागरिक संहिता का महिला पक्ष

[10]. मंजुला श्रीवास्तव : संवैधानिक परिदृश्य में महिला सशक्तीकरण